मधुबन ओम् शान्ति अंक 282 जनवरी 2016

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(16-12-15)

Happy New Year 2016

प्राणेश्वर मीठे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा ब्रह्मा बाप के हर कदम पर कदम रखते हुए सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के तीव्र पुरुषार्थ में तत्पर, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ नये वर्ष के आगमन की सबको बहुत-बहुत दिल से पदमगुणा मुबारक हो, मुबारक हो।

अभी तो नया वर्ष नया उमंग, नया उत्साह लेकर समीप आ रहा है। सभी बाबा के बच्चों में यही शुभ संकल्प है कि इस नये वर्ष में कोई न कोई नवीनता सम्पन्न सेवा करके सबके दिलों में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना ही है। बीते हुए 2015 में सभी ने खूब उमंग-उत्साह से बहुत अच्छी सेवायें की हैं। अब तो क्वालिटी की विशेष आत्माओं को और समीप लाना है, साथ-साथ स्व-स्थिति और सेवा का बैलेन्स रखते हुए रही हुई सेवाओं को सम्पन्न करना है। बापदादा तो हम बच्चों से अब यही चाहना रखते हैं कि बच्चे प्रकृतिजीत, कर्मेन्द्रिय जीत, कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर अव्यक्त-वतन वासी फरिश्ता बनें। इसके लिए जितना हो सके अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। अब छोटी मोटी बातों में संगम की इन अमूल्य घड़ियों को व्यर्थ नहीं गंवाना है। बीती को सेकण्ड में बिन्दी लगाकर एकरस स्थिति में स्थित हो, ब्रह्मा बाप समान न्यारा प्यारा और निरसंकल्प रहना है। यह समानता ही सम्पन्नता वा सम्पूर्णता का अनुभव करायेगी। बोलो, हमारी मीठी मीठी बहिनें भाई इस नये वर्ष में, विशेष जनवरी मास, वरदानी मास में सभी मिलकर ऐसी तपस्या करेंगे ना! मधुबन से तो आपके पास बहुत अच्छा खजाना पहुंचता रहता है। जनवरी मास के पुरुषार्थ की प्वाइंटस भी भेजी गई हैं, साथ-साथ ब्रह्मा बाप ने कौन-कौन से कदम उठाये, जिन्हें हर ब्राह्मण बच्चे को फॉलो करना है, वह प्वाइंट्स भी आ रही हैं। सभी इसी अनुसार संगठित रूप में पुरुषार्थ की रेस करेंगे तो बहुत अच्छा शक्तिशाली वायुमण्डल बनेगा और विश्व की अनेक आत्माओं को वह सकाश मिलती रहेगी।

बाकी तो प्यारे बापदादा ने हम सबको अनासक्त वृत्ति से निष्काम सेवाधारी बनाया है, उसमें भी अन्तर्मुखता, एकाग्रता की शक्ति दिल को बहुत अच्छा बना देती है। मुझे दिल में खुशी है कि दिलवाला बाप ने हमारी दिल को सच्ची बातें सिखा करके, स्नेह की दृष्टि देकर साफ स्वच्छ बना दिया है। अब हम सबको रूहानी कनेक्शन में रहना है, सूक्ष्म में हम सब साथ-साथ हैं, एक ही घर, एक ही बाप के बच्चे, एक ही मुरली जो विश्व भर में चलती है, वही हमारी पढ़ाई है। बाबा की मुरली से रोज़ ऐसा अच्छा जवाब मिल जाता है जो सारे दिन में उसी को याद करके दिल खुश रहती है। पुरानी बातें जो देह अभिमान की हैं, उनसे मुक्त रहते हैं। जीवन है पर मुक्त है, बंधन नहीं है इसलिए दिल बड़ी खुश है। आराम में रहती है। तो इस नये वर्ष में ऐसी मुक्त स्थिति में रह सदा खुशनुमा, खुशनसीब, खुशकिस्मत वाली जीवन का अनुभव करते सदा वाह बाबा वाह! वाह मेरा भाग्य वाह! वाह ड्रामा वाह! के गीत गाते उड़ते रहना, उड़ाते रहना।

अच्छा - आप सबकी तबियत ठीक होगी। मुझे भी बाबा अपनी शक्ति देकर उड़ाता रहता है।

अच्छा, सबको बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप के हर कर्म रूपी कदम पर कदम रखते हुए सम्पन्न और सम्पूर्ण बनो

1) सम्पूर्ण बनने के लिए कदम-कदम पर ब्रह्मा बाप को फालो करो। जैसे ब्रह्मा बाप ने छोटे, बड़े, युवा, समान हमजिन्स सबको एक समान सम्मान दिया। ऐसे मास्टर रचयिता के स्वमानधारी बन सर्व के प्रति सम्मान-दाता बनो। सदा अपने को आदि देव ब्रह्मा के आदि रत्न आदि पार्टधारी आत्मा समझो।

2) सदा सफलता स्वरूप रहने के लिए एक ही शब्द याद रहे - फालो फादर। जो भी कर्म करते हो पहले चेक करो कि यह बाप का कार्य है! अगर बाप का है तो मेरा भी है, बाप का नहीं तो मेरा भी नहीं। तो सदा आज्ञाकारी, वफादार बन हर कदम में फालो फादर करो। जो बाप के गुण, जो बाप का कर्तव्य, जो बाप के संस्कार वही हमारे, यही सफलता मूर्त बनने का आधार है।

3) जैसे ब्रह्मा बाप इतनी बड़ी फर्स्ट अथॉरिटी होते हुए भी कितना सहन किया, बच्चों से भी सुना तो अज्ञानियों से भी सुना, इनसल्ट सहन की, सब कुछ सहन कर परिवर्तन किया, ऐसे फालो फादर करो। संगठन में सहनशीलता का गुण धारण करना बहुत जरूरी है। अगर कोई एक के लिए कुछ बोलता भी है तो दूसरा चुप रहे। इसमें 10 बारी सुनने की हिम्मत चाहिए।

4) जैसे साकार स्वरुप में ब्रह्मा बाप ने स्वयं को सदा वर्ल्ड सर्वेन्ट कहलाया, बच्चों का सर्वेन्ट कहलाया और बच्चों को मालिक बनाया, सदा मालेकम् सलाम किया। सदा छोटे बच्चों को भी सम्मान का स्नेह दिया, होवनहार विश्व कल्याणकारी रूप से देखा। ऐसे नहीं सोचा कि सम्मान देवे तो सम्मान दूँ, सदा सम्मानदाता बनें। ऐसे आप भी फालो फादर करो तो सम्मानीय बन जायेंगे।

5) तकदीरवान बच्चे हर संकल्प, बोल और कर्म में फालो फादर करते हैं। ब्रह्मा बाप समान उनके हर बोल में नम्रता, निर्माणता और महानता होगी। जो अपने को निमित्त समझते हैं उन्हों में महानता के साथ नम्रता अवश्य होगी। अगर नम्रता के बजाय महानता या महानता के बजाय नम्रता ज्यादा है तो भी सफलतामूर्त नहीं बनेंगे।

6) जैसे ब्रह्मा बाप सदा उदारचित, उदारदिल होकर रहे, ऐसे फालो फादर करो। उदारचित अर्थात् दातापन की भावना वाली दिल। अपने प्राप्त किये हुए गुण, शक्तियाँ, विशेषतायें सबमें महादानी बनने में फ्राकदिल। वाणी द्वारा ज्ञान धन दान करना यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन गुण दान वा गुण देने में सहयोगी बनो। अपने गुणों से दूसरों को गुणवान बनाओ, विशेषता भरने में सहयोगी बनो इसको कहा जाता है महादानी, फ्राकदिल।

7) जो स्वयं के प्रति इच्छा मात्रम् अविद्या है, अखण्ड दानी है, वही परोपकारी है। जैसे बाप ने स्वयं का समय भी सेवा में दिया। स्वयं निर्माण बन बच्चों को मान दिया। पहले बच्चे - नाम बच्चे का काम अपना - काम के नाम की प्राप्ति का भी त्याग किया। नाम में भी परोकारी बने। ऐसे फालो फादर करो।

8) ब्रह्मा बाप ने बच्चों को मालिक बनाया और स्वयं को सेवाधारी के रूप में रखा। मालिक-पन का मान भी दिया - शान भी दिया, नाम भी दिया। कभी अपना नाम नहीं किया - मेरे बच्चे। तो जैसे बाप ने नाम, मान, शान सबका त्याग किया, परोपकार किया, स्वयं का सुख बच्चों के सुख में समझा - बच्चों की विस्मृति कारण दु:ख का अनुभव सो अपना दु:ख समझा। ऐसे फालो फादर कर परोपकार की भावना से सम्पन्न बनो तब विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न होगा।

9) जैसे ब्रह्मा बाप साधारण तन में होते भी पुरुषोत्तम अनुभव होते थे। अभी अव्यक्त रूप में भी साधारण में पुरुषोत्तम की झलक है, तो फालो फादर। काम भले कोई साधारण हो लेकिन स्थिति महान् हो। चेहरे पर वो श्रेष्ठ जीवन का प्रभाव हो तब इस चेहरे रूपी दर्पण से आपकी स्थिति को देख सकेंगे।

10) जैसे ब्रह्मा बाप को साकार रूप में देखा, सदा डबल लाइट रहे, सेवा का भी बोझ नहीं रहा। ऐसे फालो फादर करो तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे। जैसे ब्रह्मा बाप को चलता-फिरता फरिश्ता, देहभान रहित अनुभव किया। कर्म करते, बातचीत करते, डायरेक्शन देते, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारा, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति कराई। ऐसे फालो फादर करो।

11) जैसे साकार में देखा लास्ट कर्मातीत स्टेज का पार्ट सिर्फ ब्लैसिंग देने का रहा, बैलेन्स की भी विशेषता और ब्लैसिंग की भी कमाल रही। ऐसे फालो फादर। सहज और शक्तिशाली सेवा यही है। अब विशेष आत्माओं का पार्ट है ब्लैसिंग देने का। चाहे नयनों से दो, चाहे मस्तकमणी द्वारा।

12) कई बच्चों को अनुभव है, लास्ट दिनों में कैसे ब्रह्मा बाप बात करते, समाचार सुनते आवाज से परे की स्थिति का अनुभव करा देते थे। कई बच्चे बहुत प्लैन बनाकर आते थे यह बताऊंगा, यह बताऊंगा, यह पूछूंगा.. लेकिन सामने आते ही क्या बोलना था वही भूल जाता। तो यह है फरिश्ता अवस्था। तो आप भी ऐसे फालो फादर करो।

13) जैसे ब्रह्मा बाप आदि देव वा पहला प्रिन्स प्यूरिटी की पर्सनैलिटी के आधार पर बनें। ऐसे फालो फादर करो। फ्लोलेस बनना है तो कभी फेल नहीं होना, ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठता पवित्रता है। कभी

स्वप्न में भी अपवित्रता के संकल्प नहीं आए इसको कहा जाता है प्युरिटी की पर्सनैलिटी वाले।

14) जैसे ब्रह्मा बाप को देखते ही कोई अन्जान भी समझ लेता था कि यह कोई अलौकिक व्यक्ति है। हजारों के बीच में वह हीरा चमकता था। ऐसे आप भी फालो फादर करो। सर्विस के कारण अपने को हल्का करने की जरूरत नहीं है, अभी वह समय बीत चुका। अभी लौकिक के बीच अलौकिक नज़र आओ। अनेक व्यक्तियों के बीच अव्यक्त मूर्त लगो। वह व्यक्त देखने में आयें, आप - अव्यक्त देखने में आओ, यह है परिवर्तन।

15) जैसे साकार रूप में अथक और एकरस का एग्जाम्पुल बनकर दिखाया वैसे ही औरों के प्रति एग्जाम्पुल बनना है। सर्विस के लिए समय भल न भी मिले, लेकिन अपने श्रेष्ठ चरित्र से भी सर्विस कर सकते हो। सर्विस सिर्फ वाणी से नहीं होती। आपके चरित्र उस विचित्र बाप की याद दिलाये, आपका मस्तक, यह नयन उस विचित्र का चरित्र दिखलायें। ऐसा अविनाशी लाकेट पहन लो जो उससे सबको बाप ही दिखाई दे।

16) जैसे साकार सबूत देखा - प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल एक समान था, जो सोच वही कर्म था। ऐसे बच्चों को भी फालो करना है। पांव के ऊपर पांव रखकर चलते चलो। फुट स्टेप लेने का अर्थ ही है पांव पर पांव, जैसे का वैसा फालो करना। अगर सम्पूर्ण बनना है तो आप समान नहीं लेकिन बाप समान बनाओ।

17) जैसे साकार रूप में देखा मस्तक से और नयनों से प्युरिटी के क्राउन का साक्षात्कार अनेकों को होता था। तो आप भी फालो फादर करो। अगर ऐसे स्वरूप का साक्षात्कार आत्माओं को कराओ तो सर्विस में सफलता आप के चरणों में झुकेगी। सिर्फ अपनी स्थिति ब्रह्मा बाप के समान एकरस बनाओ। कुछ भी हो जाए, उसे खेल समझकर समाप्त करना, हलचल में कभी नहीं आना।

18) जैसे साकार रूप में सूरत से हर गुण का प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया। कैसी भी अथॉरिटी वाला, कैसे भी मूड वाला सामने आया लेकिन गुणों की पर्सनैलिटी, रूहानियत की पर्सनैलिटी, सर्व-शक्तियों की पर्सनैलिटी के सामने हर एक झुक गया, वह अपना प्रभाव नहीं डाल सका। यह वृत्ति और वाणी की अथॉरिटी का प्रत्यक्ष सबूत देखा, तो फालो फादर करो।

19) जैसे साकार रूप में निमित्त बन हर कर्म संयम के रूप में करके दिखाया, ऐसे प्रैक्टिकल में आप लोगों को फालो करना है। जैसे गाड़ी अगर ठीक पट्टे पर चलती है तो निश्चय रहता है एक्सीडेंट हो नहीं सकता। बेफिक्र हो चलाते रहेंगे। वैसे ही अगर स्वयं की स्मृति का नशा है, फाउन्डेशन ठीक है तो कर्म और वचन संयम के बिना हो नहीं सकता।

20) बाप बच्चों को रिगार्ड देकरके राय सलाह देते थे, इसलिए किसी को यह संकल्प नहीं आता कि यह राय राइट है या रांग है। ऐसे आप बच्चे भी रिगार्ड देने का रिकार्ड अच्छे से अच्छा रखो, इसमें फालो फादर करो। कारोबार के प्रमाण भी एक दो को रिगार्ड देना, यह भी एक संयम है। तो साकार द्वारा देखी हुई बातों को फालो करो। ऐसी स्टेज में समानता लाओ।

21) जैसे साकार बाप ने कम खर्च बाला नशीन बन करके दिखाया। ऐसे फालो फादर करो। जैसे प्रवृत्ति में रहने वाले स्थूल धन से अपना पद ऊंच बना सकते हैं, वैसे ही यज्ञ निवासी भी अगर यज्ञ की स्थूल वस्तु कम खर्च बाला-नशीन बनकर यूज़ करते हैं, तो उनका भविष्य भी बहुत ऊंच बनता है।

22) जैसे बाप के पास कोई भी आते थे तो खाली हाथ नहीं भेजते थे, स्थूल में भी कोई न कोई यादगार सौगात देते थे। यह स्थूल रस्म भी सूक्ष्म कर्तव्य के साथ सहज स्मृति दिलाने के लिए एक सहज साधन बनाया हुआ है। ऐसे आप भी यही लक्ष्य रखो कि हर एक कुछ न कुछ थोड़ा बहुत लेकर अवश्य जाये। तब तो आपके विश्व के राज्य में आयेंगे।

23) जैसे बाप ने अपना आवश्यक समय भी विश्व कल्याण के प्रति दिया ऐसे ज्यादा से ज्यादा समय और संकल्प विश्व कल्याण प्रति लगे। जब इतने बिजी हो जायेंगे तब व्यर्थ स्वत: समाप्त हो जायेगा और सदा समर्थ संकल्प चलेंगे। सदा विश्व सेवा में समय लगेगा। जैसे बाप ने हर संकल्प, हर कर्म बच्चों की वा विश्व की आत्माओं प्रति लगाया ऐसे फालो फादर करो।

24) फॉलो फादर का अर्थ यह नहीं है कि सिर्फ ईश्वरीय सेवाधारी बन गये लेकिन फॉलो फादर अर्थात् हर कदम पर, हर संकल्प में फॉलो फादर। जैसे बाप के ईश्वरीय संस्कार, दिव्य स्वभाव, दिव्य वृत्ति व दिव्य दृष्टि सदा है, वैसे ही वृत्ति, दृष्टि, स्वभाव व संस्कार हों। ईश्वरीय सीरत वाली सूरत हो, जिस सूरत द्वारा बाप के गुणों और कर्तव्यों की रूप-रेखा दिखाई दे इसको कहा जाता है फालो फादर।

25) जैसे साकार बाप ने हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करके किया, जिससे व्यर्थ कर्म वा पाप कर्म से मुक्त रहे, हर कर्म सुकर्म हो गया। साक्षी दृष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म बन्धनी आत्मा नहीं बनें। ऐसे फालो फादर कर दृष्टान्त रूप बनो। अभी सिर्फ "कर लेंगे, हो जायेगा" इस आराम के संकल्पों के डंलप को छोड़ो। "करना ही है" यह मस्तक में सदा स्लोगन याद रहे तो फिर परिवर्तन हो जायेगा।

26) जैसे ब्रह्मा बाप सदा स्वराज्य करने वाले अर्थात् स्व अधीन नहीं लेकिन स्व अधिकारी थे। ऐसे ब्रह्मा बाप समान सदा स्व पर राज्य करने वाले वहाँ भी साथ में राज्य करेंगे। यहाँ के नम्बरवन रेगुलर और पंचुअल गॉडली स्टुडेन्ट वहाँ भी साथ-साथ पढ़ेंगे। जो यहाँ अतीन्द्रिय सुख के झूले में बाप के साथ-साथ सदा झूलते

हैं वह वहाँ भी झूले में साथ झूलेंगे। जो यहाँ अनेक प्राप्तियों की खुशी में नाचते हैं वह वहाँ भी साथ-साथ रास करेंगे। जो यहाँ बाप के गुण और संस्कार के समीप सर्व सम्बन्धों से बाप के साथ अनुभव करते हैं वही वहाँ रायल कुल के समीप सम्बन्ध में आयेंगे।

27) जैसे आदि में स्थापना के कार्य प्रति साकार रूप में निमित्त एक ही बने – अल्फ की तार पहले एक को आई। सेवा अर्थ – सर्वस्व त्यागमूर्त एक अकेले बने। जिसको देख बच्चों ने फालो फादर किया। त्याग और भाग्य दोनों में नम्बरवन बाप निमित्त बने। ऐसे आप बच्चे भी बाप समान बन स्वयं को और सेवा को सम्पन्न करो।

28) हर बात में "छोड़ो तो छूटो", यही पाठ ब्रह्मा बाप को नम्बरवन ले गया। शुरू से छोड़ा तो छूट गया ना। यह नहीं सोचा कि साथी मुझे छोड़ें तो छूटूं, सम्बन्धी छोड़ें तो छूटूं। विघ्न डालने वाले विघ्न डालने से छोड़ें तो छूटूं। भिन्न-भिन्न परिस्थितियां मुझे छोड़ें तो छुटूं। यह कभी नहीं सोचा। लेकिन सदा यही पाठ प्रैक्टिकल में दिखाया, तो फालो फादर। इसको कहा जाता है - जो ओटे सो अर्जुन।

29) "सी फादर, फालो फादर", इस मंत्र को सदा सामने रखते हुए चढ़ती कला में चलते चलो। कभी भी किसी आत्मा को नहीं देखना, क्योंकि आत्मायें सब पुरुषार्थी हैं। पुरुषार्थी को फालो करेंगे तो पुरुषार्थी में अच्छाई भी होती और कुछ कमी भी होती है, वह सम्पन्न नहीं है इसलिए फालो फादर करना ब्रदर या सिस्टर को फालो नहीं करना। तो जैसे फादर एकरस है ऐसे फालो फादर करने वाले भी एकरस रहेंगे।

30) जैसे ब्रह्मा बाप ने सारे ज्ञान का सार स्वयं में धारण कर बच्चों को फालो फादर करने की हिम्मत दी, साकार रूप द्वारा अन्तिम महावाक्य (निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी की) अमूल्य सौगात दी, इन्हीं तीन बोल से बाप ने कर्मातीत अवस्था को पाया। तो फालो फादर करो।

31) जैसे साकार बाप ने स्थिति का स्तम्भ बनकर दिखाया, इसलिए उनके स्नेह में यह स्मृति स्तम्भ (शान्ति स्तम्भ) भी बनाया है – ऐसे ही तत त्वम् – सर्वगुणों के स्तम्भ बनो। जो विश्व के हर धर्म वाली आत्मायें धारणा स्वरूप स्तम्भ आपको मानें – विश्व के आगे आदि पिता के समान शक्ति और शान्ति स्तम्भ बनो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 30-4-13 *मधुबन*

"बाबा को पहचानने के साथ व्यवहार और सम्बन्ध में एक दो को पहचानने से नम्बर मिलते हैं"

(दादी जानकी)

बाबा बहुत अच्छा है, क्यों? हमारा बाप टीचर बन गया, कल बोला विचार सागर मंथन करो, आज बोला बुद्धि को सतोप्रधान बनाओ। कभी कुछ, कभी कुछ बाबा ऐसा बताता है ताकि हम बिजी रहें, अच्छे-से-अच्छे ज्ञान को धारण करें। अनहोनी बात, इम्पॉसिबुल बात को बाबा पॉसिबुल कर देता है इसलिए बहुत अच्छा बाबा है। बुद्धि सालिम है, बाबा बहुत अच्छा है। एक बाबा दूसरा न कोई तो विक्ट्री है। तो बाबा कितना अच्छा है। व्हाय नहीं कहना है, ऐसे बनना है। विजड़म माना शार्टकट वे है, सिम्पल वे सिर्फ सैम्पुल बनना है, वर्ड ऑफ विजड़म। कैसे करूँ, क्या करूँ... ऐसे नहीं बोलो। सिम्पल बात को बड़ी बात नहीं बनाओ। बड़ी को छोटी बना दो तो दोष नहीं है और औरों का दोष निकालके छोटी को बड़ा बनाया तो मेरा दोष हो जायेगा। ऐसा यह क्यों करता? सम्भलके बोल, यह सोचो भी नहीं, मुख से नहीं बोलो। यह वर्डस् मुख से निकलता है, विजड़म कैसी है, कितनी है, अन्दर से दिखाई पड़ता है। अन्दर के चेहरे से दिखाई देता है। इसलिए बुद्धि को सतोगुणी से सतोप्रधान बना दो। थोड़ा भी सोचने बोलने में एक्यूरेट नहीं है तो बाबा देखेगा मैं कुछ और चाहता हूँ यह करता कुछ और है। बात को थोड़ा भी बनाने में नुकसान है, बड़ी को छोटा बनाने में बहुत फायदा है। उसी इशारे से समझ गये जरुरी था समझना जो मिस हो गया था तो शुक्रिया बाबा आपका।

मुख से शब्द ऐसे निकलें जो 20 साल पहले वाले शब्द भी याद आवें तो खुशी की आवाज निकले क्योंकि संगमयुग के समय का बहुत महत्व है। जितनी पढ़ाई उतनी कमाई। अन्दर संकल्प की जो शुद्धि है ना, वह औषधि है। यह औषधि जो जितना यूज़ करता है उसके लिये उतना अच्छा होगा। अन्त मते तक बाप, टीचर, सतगुरू तीनों को खुश करना है तो धर्मराज को भी खुश करो। मेरे से तीनों खुश हैं, यही विज़डम है। तीनों को खुश करना माना धर्मराज को खुश करना। है रूप तीन ही लेकिन उसके अन्दर में धर्मराज छिपके ऐसा बैठा है, अभी-अभी सुबह शाम हरेक देखे, मेरी खुशी गुम क्यों हुई? धर्मराज ने सजा दी। अभी देता है थोड़ा कान पकड़के सावधान करने के लिए, जो बाबा ने कहा था मुरली सुनने समय अगर बुद्धि इधर उधर

गयी तो योग नहीं है। देखा जाता है सुनता यहाँ है, पर बुद्धि बाहर है तो बात अन्दर नहीं गयी इसलिए बाहर में सबके साथ रहते हुए भी अन्तर्मुखी है तो वो सदा सुखी है। मेरे संग सेवा करने वाले भी सुखी हों। परमात्मा तो सबको सुख शान्ति में सम्पन्न बना देता है माना सुख शान्ति सम्पत्ति है।

तो विज़डम बाबा की है, सुनने वाले आप है, अगर आप न सुनते तो मैं कोई काम की नहीं होती। अपनी बुद्धि को अभिमान से फ्री रखो। अपमान की फीलिंग कभी न आवे, यह मंजिल ऊंची है जाना जरुर है। तो ऊंचे कैसे जायेंगे! सारा दिन ऐसे करूँ, नहीं। ऐसे करने से... एक घण्टा सुनने के साथ-साथ सुख-शान्ति-प्रेम जितना खिंचना हो खींचे, फिर रात को घर में नींद न आये भले, क्या सुना क्या सुना... तो अनुभव ज्यादा होगा। शब्द किसको न भी याद आये इसलिए भगवान के महावाक्य हैं, डिवाइन विज़डम, डिवाइन इनसाइट, दिव्य बुद्धि दिव्य दृष्टि, यह सुनने के बाद रिपीट करने से और गहरा होता जाता है।

हर कार्य में निश्चय से विजय हुई है, यह हम देखते आ रहे हैं इसलिए बाबा हर बात की गहराई में ले जाता है। दुनिया में कितनी गंदगी, कितना फैशन, क्या खाना पीना... नशे में धूत रहते हैं। यह पढ़ाई पढ़ते हैं, जवानी क्या होती है, पढ़ाई क्या होती है, किसलिए वहाँ पढ़ने जाते हैं? जैसी है पढ़ाई, वैसी है यूनिवर्सिटी, वैसे हैं पढ़ने वाले, तो पढ़ाने वाले कौन होंगे? मुझे इस बात की बड़ी खुशी है भारत में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय लिखने की परमीशन मिल गयी और यहाँ गॉड फादरली यूनिवर्सिटी है। यह किसकी कमाल? हमारे यहाँ इतने पढ़ने आते फ्री ऑफ चार्ज। सवेरे सवेरे उठके स्नान पानी करके अमृतवेले क्लास में हाजिर हो जाते हैं। वैसे माया बड़ा धक्का खिलाती है, तरस पड़ता है। अभी हम सब मिल करके उस पार जा रहे हैं। ऐसे नहीं कोई छोटा है, कोई मोटा... नहीं बाबा ऐसा देखना चाहता है, मेरे युनिवर्सिटी के स्टूडेन्ट्स यहाँ बूढे जवान इकट्ठे पढ़ते हैं, इसका उदाहरण सभा में देख सकते हैं। ऐसी युनिवर्सिटी तो सारे कल्प में नहीं देखी। योग लगाते जाओ, सहयोगी बनते जाओ और सहयोगी बनाते जाओ और योगी बना दो यही तो सेवा है। सिर्फ बाबा को जानो, अपने को पहचानो।

कई हैं जो अभी भी अपने को नहीं पहचानते हैं और एक दो को भी जानें इसमें बड़ा धीरज़ चाहिए। रूहानियत चाहिए, मैं एक दो को पहचानूँ, बाबा को पहचानना तो इज़ी था क्योंकि डायरेक्ट योग लगाया, थोड़ा सुख शान्ति मिला पर इसमें मुझे क्या मिलेगा? जरुरी क्या है? व्यवहार और सम्बन्ध में जब आते हैं तब एक दो को पहचानने से नम्बर मिलता है। वो विजड़म कहाँ तक किसमें है, मिल करके रहने की या मिलाने की। जो मिल करके रहता है वो मिलाने के बिगर चल नहीं सकता है, उसको अनुभव है। उसको कभी दूरबाज खुशबाज का ख्याल नहीं आयेगा। इस ख्याल से जो फ्री हुआ, बाबा उनसे अनेक काम करा लेता है। यह बाबा ने आज दिन तक कराया है। तो मैं कहती हूँ जितना बाबा को अपना बनाओ, तो बाबा भी मुझे अपना बनाके हर कार्य कराता है। फिर हर कार्य करते, सम्बन्ध में रहते भी मुस्करा सकते हैं। वृत्ति से दृष्टि महासुखकारी। तो सारा पुरुषार्थ वृत्ति पर है। मन शान्त है तब बुद्धि भी ठीक काम करती है। वृत्ति साफ है तो खुद सतोप्रधान बनने से और भी बन जाते हैं। फिर बाबा बहुत खुश हो जाता है क्योंकि बाबा को ऐसे बच्चे चाहिए।

1-5-13

"भाई-बहनों के प्रश्न - दादी जानकी जी के उत्तर"

प्रश्न:- हम आपस में मिल करके कैसे काम करें, उसके लिए कुछ बताईये?

उत्तर:- हर एक का अपना-अपना पार्ट है लेकिन समझना चाहिए कि हरेक का क्या पार्ट है, उसके पार्ट अनुसार उसकी बुद्धि चलती है। हरेक के पार्ट में भी अपनी विशेषता है। पहले तो बाबा का बच्चा है, अगर यह नहीं देखेंगे तो विशेषता नहीं दिखाई पड़ेगी। मैं बाबा का बच्चा हूँ, छोटी बेबी नहीं हूँ। समझ से काम लेना है। भगवान के परिचय से हमारी बुद्धि क्लीन हो गयी है। संगमयुग है, यह बाबा के बच्चे हैं। तो यह सूक्ष्म है, मैं उसी दृष्टि से देखती हूँ, उसी स्मृति में रहती हूँ तो हमारा आपसी व्यवहार अलौकिक हो जाता है। अगर बातों में हैं तो कहाँ-न-कहाँ कोई बात ऐसी है, जो बाप की भी सुनने वाले नहीं हैं तो वही लहर पूरे संगठन में चलती है। जो बाप ने सुनाया है, उस पर अमल करने से कहीं कोई प्रॉब्लम नहीं है। आज नहीं तो कल संग और सहयोग, सच्चाई से समीपता आती है। जो समझ से कैच कर लेते हैं, स्नेह से सहयोगी बन जाते हैं। तो संगठन का किला मजबूत हो जाता है। संगठन में रहते इसको ऐसे नहीं करना चाहिए, ऐसे नहीं कहना चाहिए, यह ख्याल आया ना तो जो बाबा जैसे सिखाता है वो नहीं

होता है इसलिए बाबा की शिक्षा से, उस बात को सोचके भारी नहीं हो जाना है। लाइट रहेंगे तो बाबा की माइट औरों को भी ऐसा सहयोग देगी। स्वच्छता, सत्यता और सभ्यता से जो व्यवहार है उससे वायुमण्डल बहुत पॉवरफुल हो जाता है, उसमें सब खींच जाते हैं। जहाँ स्वच्छता है वहाँ बेफिक्र हैं। जहाँ सत्यता है वहाँ जीत है।

समझने में तो समय नहीं लगा पर प्रैक्टिकली जब देखते गये कि जो जो बाबा कहता रहा वह निमित्त हमारे द्वारा होता रहा, उससे पता चलता गया कि यह हमारा पार्ट है। जैसे यह ज्ञान विदेश में जायेगा, सब धर्म वालों को मिलेगा तो आज देखो कहाँ-कहाँ तक यह ज्ञान पहुँच गया है, परमात्मा बाप को जान करके अपने सतयुगी पार्ट का हक ले रहे हैं। हरेक अपने कर्म से भाग्य बना रहे हैं। जितना जिसने इस ज्ञान को अपने जीवन में लाया है उतना उसका फल अच्छा पाया है।

प्रश्न:- आपकी भावना बहुत समय से लगातार मजबूत हो गयी है इसीलिए आपके सामने पत्थर भी आये उसको भी मेल्ट कर सकते हो लेकिन कभी-कभी दादी ऐसे टेस्ट आते हैं कि कोई कोई आत्मायें आपकी भावना को स्वीकार नहीं करती हैं तो उस समय आप क्या अपनी वीज़न में रखते हो, आप क्या देखते हो ताकि अपनी गुड विशेश उस आत्मा के प्रति बदले नहीं, क्योंकि कभी-कभी हम किसी के प्रति कुछ बोलते हैं वो एक्सेप्ट नहीं करते हैं तो सूक्ष्म हमारी भावना बदलती है।

उत्तर:- बिचारे की थोड़ी समझ कम है यह सोचा तो मुझे फीलिंग नहीं आयी। फिर भी मैं भावना रखेंगी अच्छी तरह से, तो वह ठीक हो जाता है। वह आज मुझे नहीं पहचानता है कोई हर्जा नहीं, कल पहचानेगा पर मैं अपनी सीट से क्यों उतर आऊं। सदा हज़ूर के साथ हाजिर रहूं, वह मेरे साथ है, तो कई भिन्न-भिन्न बातें होती हैं फिर भी साक्षी हो करके साथ रहने का नेचुरल नेचर बनाया है। ऐसे नहीं कि हमेशा उन्हीं बातों को दोहराते उसके पीछे लगे रहें, अच्छी-बुरी कोई भी बात है, उन बातों पर हमें चिंतन नहीं करना है क्योंकि इतनी समझदारी से सूक्ष्म अपने आपको सेफ भी रखना है, साफ भी रखना है। तो कभी भी कोई हमारे ऊपर वार करें, नहीं किसकी ताकत नहीं है। तो जितना साफ रहो, सेफ रहो उससे यह फायदा है। तो इन सब बातों को समझकर प्रैक्टिकल में लाने से जो भी भावना या प्राप्ति है, उससे आगे बढ़ना इज़ी हो जायेगा।

05-9-15

"कन्ट्रोलिंग पॉवर द्वारा जैसा समय वैसा स्वरूप धारण करो"

(गुल्जार दादी)

अपना सतयुगी स्वरूप अनुभव किया! यहीं बैठे रहे या अनुभव किया? क्योंकि जैसा समय वैसा स्वरूप चेन्ज करना आना चाहिए। ऐसे नहीं गीत बज रहा है डांस का और मैं छुप रही हूँ, ये नहीं हो। जैसा समय वैसा रूप धारण करना चाहिए क्योंकि सभा में रौनक तभी आती है जब सब एकमत हों, तो जब डांस हो तो डांस करो, शान्ति हो तो शान्त रहो। सब रूप बदलने की आदत चाहिए। कैसे होगा, नहीं, हमारे हाथ में है, हम अपनी बुद्धि को अपने हाथ में रखते हैं तो जो हम चाहें वो कर सकते हैं। संगमयुग की यही विशेषता है अभी-अभी डांस, अभी-अभी योग, दोनों हमारे हाथ में हों। ऐसे नहीं कि डांस हो रहा है तो बस डांस के पीछे ही रहें, कन्ट्रोलिंग पॉवर हो। सबके हाथ में कन्ट्रोलिंग पॉवर है? हमारे में कन्ट्रोल होना चाहिए, जो चाहे वो रूप धारण कर सकें, ऐसी पॉवर है? देखो अपने में चेक करो। ऐसे नहीं बैठे यहाँ हो लेकिन बुद्धि नाच रही हो, सेकेण्ड में ब्रेक तो ब्रेक। कैसा भी वायुमण्डल हो एक सेकेण्ड में शान्ति तो शान्ति वो भी सहज हो। संकल्प में भी नहीं सोचो, करने के टाइम करो, खूब करो लेकिन कन्ट्रोल तो कन्ट्रोल इसको कहा जाता है - योग की सिद्धि। सिद्धि स्वरुप हो ना! तो कन्ट्रोलिंग पॉवर जरुर होनी चाहिए। जहाँ बाबा ले जाए वहाँ जाओ, रास करो तो खूब करो। हम मालिक हैं ना, ये भी अभ्यास चाहिए, ऐसा नहीं कि ट्रैफिक कन्ट्रोल चल रहा हो और हमारी बुद्धि डांस में ही लगी रहे क्योंकि समय अनुसार ऐसी परिस्थितियाँ आनी हैं, जिसमें ये प्रैक्टिकल करना पड़ेगा, उस समय कहेंगे कि आदत नहीं है, ये नहीं होगा। मैं मालिक हूँ, जो पॉवर चाहिए मैं यूज़ कर सकती हूँ। ऐसा अभ्यास है कि फिर भी दिल हो रही है उठें। जब चाहें कर्मेन्द्रियाँ हमारे ऑर्डर में हों, लूज़ नहीं हो। मैं मालिक हूँ, हैं ऐसे! ऐसी कन्ट्रोलिंग पॉवर चाहिए। समझो अभी चुप किया तो बुद्धि वहाँ नहीं जानी चाहिए। जैसे संगठन का स्वरूप हो वैसे प्रैक्टिकल हो। ऐसा समय आयेगा जब प्रैक्टिकल करना पड़ेगा तो अभ्यास कब करेंगे? अभ्यास तो अभी करना है ना। मैं मालिक हूँ, कर्मेन्द्रियों को जैसा ऑर्डर

करूँ, वही हो। इशारा मिल रहा है अभी चुप हो जाओ और मैं बोलती रहूँ तो यह मैनर्स तो नहीं हुआ ना! तो समय अनुसार सेकेण्ड में कन्ट्रोल चाहिए। आज बाबा ने पाठ पढ़ाया कि कन्ट्रोलिंग पॉवर अपने हाथ में होनी चाहिए। ऑर्डर तो ऑर्डर। ऐसे कन्ट्रोलिंग पॉवर है? हाथ उठाओ। (सभी ने उठाये) ये तो खुशी की बात है जो सभी ने हाथ उठाया, उसकी मुबारक है, परन्तु समय पर कन्ट्रोलिंग पावर काम में आये। मानो क्रोध आ रहा है, उस समय अगर कन्ट्रोल होगा तो झगड़ा नहीं होगा। जब कभी भी कोई परिस्थिति आये तो पास का सर्टीफिकेट मिलना चाहिए। तो जो भी करें दिल से करें, जब पढ़ाई का समय हो तो पढ़ाई पर अटेन्शन चाहिए। आदत डालो कुछ भी हो लेकिन मन पर कन्ट्रोल हो। आपकी टॉपिक्स में मन को कन्ट्रोल करने का टॉपिक भी है ना! तो वो प्रैक्टिकल होना चाहिए, कैसा भी माहौल हो, ऑर्डर तो ऑर्डर हो सकता है? (सभी ने हाथ उठाये) मुबारक हो। (आज टीचर्स डे भी है, हमें महसूस हो रहा है कि हमारी दादी जी, प्रिंसीपल टीचर हम सब स्टूडेन्ट्स को क्लास करा रहे हैं) सभी टीचर्स हैं, चाहे बहनें हो चाहे भाई हो। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"कर्मातीत बनना है तो कर्मेन्द्रिय जीत, कर्मबन्धन मुक्त बनो, नया हिसाब-किताब नहीं बनाओ"

आज की मुरली में आदि से अन्त सार रहा कि बच्चे तुम्हें एक बाप की याद में रह स्वयं में शक्ति भर आत्मा रूपी दीपक को जगाना है। बाबा की याद में रहकर बैटरी चार्ज करनी है। याद से ही सर्व शक्तियाँ जमा होती हैं। आत्मा में बल आता है, जिससे अन्धकार मिट जाता, रोशनी आ जाती है। बैटरी चार्ज होना माना आत्मा में लाइट, माइट आना और जब लाइट यानि रोशनी आती है तो अन्धकार मिट जाता है। तो बाबा की याद है जैसे घृत। दीपक में जब तक घृत रहता है तब तक दीपक जगता रहता है। तो देखना है हमारी आत्मा रूपी दीपक में बरोबर योग का घृत भरा हुआ है। योग का घृत भरा हुआ रहेगा तो दीपक अपनी रोशनी देता रहेगा।

दीपक की सम्भाल भी रखनी होती ताकि दीपक को कोई भी तूफान न लगे। अगर दीपक को शीशे का शेड दिया जाए तो वह दीपक हवा, तूफानों में भी जलता रहेगा। बुझेगा नहीं। तो पहले बाबा की याद से बैटरी चार्ज करो और साथ में आत्मा रूपी दीपक को माया के तूफानों से बचाओ अर्थात् बाबा की याद की शक्ति से देह और देह के बन्धनों को दूर रखो। और बाबा के याद की शक्ति से आत्मा की रोशनी को सम्भालो, भरो। तो न आत्मा को माया का तूफान लगे, न कोई व्यर्थ देह के संकल्प विकल्प से बैटरी वीक हो। तो उसकी सम्भाल है कि माया से बचाकर रखो।

दूसरा - जितना-जितना बाबा से लाइन क्लीयर रखेंगे तो बुद्धि का योग सदा एक बाबा में लगा रहेगा। फिर बुद्धि व्यर्थ यहाँ वहाँ नहीं जायेगी। और बुद्धियोग ठीक है तो जो मन के संकल्प विकल्प व्यर्थ होते चलते हैं वो आटोमेटिकली शीतल हो जायेंगे, अथवा मन के संकल्प विकल्प स्थिर हो जायेंगे। व्यर्थ नहीं होंगे। तीसरा - जितना-जितना हम अपने व्यर्थ संकल्पों को कन्ट्रोल रखेंगे उतना-उतना हमारी कर्मेन्द्रियां भी कन्ट्रोल में रहेंगी। सर्व कर्मेन्द्रियाँ शीतल रहेंगी, इससे सर्व कर्मेन्द्रियजीत बनेंगे। जब कर्मेन्द्रिय जीत रहेंगे तब अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेंगे। दूसरा - अगर कर्मेन्द्रियां जीत रहे तो यह साधन ही कर्मातीत बना देगा। आज बाबा ने मुरली में कहा बच्चे तुम्हें कर्मातीत बनने का पुरुषार्थ करना है। तो क्या पुरुषार्थ करो? सिर्फ अपनी हर कर्मेन्द्रिय कन्ट्रोल करो। हम हर कर्मेन्द्रिय के मास्टर हैं, न कि कर्म इन्द्रियों के सर्वेन्ट हैं। मास्टर के ऑर्डर में हर कर्मेन्द्रिय रहे, मैं आत्मा मास्टर हूँ। तो मास्टर किसी भी कर्मेन्द्रिय के अधीन नहीं होना चाहिए।

कई कहते हैं कि न चाहते भी आँखे धोखा देती हैं, क्यों? मैं आँखों की राजा या आँखें मेरी राजा हैं, जो आँखे मुझे धोखा दें? नहीं देना चाहिए। दूसरा, इन सभी इन्द्रियों का आधार तो फिर भी बुद्धि है। बुद्धि में जब राइट रांग की शक्ति है और बुद्धि बाबा से जुटी हुई रहती है, तो नीचे बुद्धि क्यों आवे जो व्यर्थ संकल्पों में गिरा दे। कहा जाता है कि अज्ञानी कोई गलती करे तो उसको एक गुणा दण्ड मिलता है परन्तु ज्ञानी अगर गलती करे तो उनको दस गुणा दण्ड मिलता है। तो ज्ञानी के ऊपर बहुत बड़ी सूक्ष्म जिम्मेदारी होती है। समझो सूक्ष्म में भी थोड़ी घड़ी के लिए हमारी बुद्धि कहाँ भी जाती है, इतनी खुशी नहीं है। मन में व्यर्थ संकल्प चलते हैं, वेस्ट टाइम जाता है तो उनको कहते हैं एनर्जी वेस्ट गई। तो वेस्ट एनर्जी एक बार होती परन्तु ज्ञान का हिसाब इतना सूक्ष्म

है, जो उसका शेक फिर बहुत टाइम चलता है। तो जो वेस्ट टाइम चलता उसमें हमारी स्थिति डाउन हो जाती है। इसके लिए हमारा यह अटेन्शन रहे कि कहीं कोई सूक्ष्म भी हमारी बुद्धि में कोई फीलिंग न हो।

फीलिंग के भी अनेक प्रकार होते हैं। समझो उदासी आई, फीलिंग में निराशा आई, फीलिंग में सन्तुष्टता अथवा संतोष नहीं है, एक दूसरे के प्रति सद्भावना नहीं है। यह सब फीलिंग के ही भिन्न-भिन्न रूप हैं। जब तक सद्भावना नहीं होगी तो रहम की भावना भी नहीं होगी। फिर सर्विस में सफलता भी नहीं होगी। अगर सर्विस में सफलता नहीं तो फिर हमको दुआयें कहाँ से मिलेंगी। दुआयें भी हमारी पढ़ाई में बहुत बड़ी सबजेक्ट हैं। तो देखना है कि हम सारे दिन में क्या करते जो मुझे एक एक से अनेक दुआयें मिलें। यह भी चेक करना होता है। अब समय तो सूचना दे रहा है कि तुम्हें अपनी स्थिति मन-वचन-कर्म से सूक्ष्म भी इतनी उपराम रखो, इतने उपराम रहो जो कहाँ भी मेरी इतनी मात्रा में भी अटैचमेन्ट न हो। जैसे ब्रह्मा बाबा को लास्ट में देखा, कुछ समय पहले बाबा के पास हम आते थे, बैठकर चर्चायें करते थे, यह करो वह करो। परन्तु पिछाड़ी के समय में बाबा इतना उपराम जो मैं क्या सुनाऊं। अच्छा, बच्ची आई हो, बड़ा प्यार दिया, बस। हम चाहें बाबा से कोई बात करें, कुछ सुनावें ... अच्छा, बच्ची ठीक है। बस। जिस घड़ी देखो, बाबा एकदम डीप साइलेन्स में समाये हुए हैं। जरा भी आवाज़ बाबा पसन्द नहीं करते थे। चाहे चलना फिरना, चाहे खाना, चाहे सोना ... बिल्कुल लगता था बाबा यहाँ इस दुनिया से बहुत पार ऊपर हैं, नीचे नहीं हैं। तो लास्ट में बाबा की ऐसी उपराम अवस्था देखी, बाबा कहते बच्ची अब हर एक को एवररेडी रहना है। न दुनिया का कोई आकर्षण, न लौकिक का कोई बन्धन, न अलौकिक का बन्धन, अपने शरीर का भी बिल्कुल कोई बन्धन नहीं, एकदम ऊपर, जैसे बाबा फरिश्तों की दुनिया में बैठा है। तो साकार बाबा की लास्ट स्टेज हमारी आंखों के सामने अनेक बार आती, अव्यक्त फरिश्ता। तो हम सभी भी स्वयं में ऐसी शक्ति भरें। अनुभव करें, न इस तन में कोई ममता हो न मन में कोई सूक्ष्म लगाव है। जबकि समय अब हमें कह रहा है और बाबा भी इशारा दे रहा है तो हर प्रकार से एवररेडी रहें। यह तन भी बाबा तेरा है, धन भी तेरा है, मन भी तेरा है, तो यह सर्व कर्मेन्द्रियाँ भी तेरी हैं। न मन में कोई आश है, न कोई लगाव है, न कोई तूफान है, न कहाँ भटकता है, न उसमें कोई चंचलता है, न कोई ऐसे संस्कार है, जिन संस्कारों के वश हो, परेशान हो, नहीं। ऐसे हमारे संस्कार हो जायें बस एक मेरा मीठा बाबा और एक मीठे बाबा का परिवार साथ-साथ एक मीठे बाबा की सेवा सहज हो। तो सभी मस्त रहो मौज में रहो, बाबा-बाबा करते चलो तो हमारी बैटरी चार्ज रहेगी और रिजल्ट यह हो जायेगी जो चलते-फिरते किसी भी कारण से जो कर्म का हिसाब चलता, वह कर्म का हिसाब भी सहज चुक्तू हो जायेगा। न नया कर्म का बन्धन बनाओ, न नया कर्म का किसी से सम्बन्ध हो, न कर्म का कोई से लेन देन का खाता हो तब कहेंगे कर्मेन्द्रियां जीत, कर्म बन्धनमुक्त। तो रिजल्ट में फिर बैटरी चार्ज होते-होते हम कर्मातीत बन जायेंगे।

कर्मातीत अर्थात् हम इस पुरानी दुनिया से मुक्त फरिश्ता स्थिति में रहें, तब अन्त में हम सेकेण्ड में बाबा की गोद में उड़के जायेंगे। बाबा कहता है तुम्हारा कोई भी हिसाब-किताब न हो। बाकी शरीर का जब हिसाब-किताब कम्पलीट हो जायेगा फिर तो यह शरीर भी नहीं रहेगा। तो जब तक शरीर है, तब तक तो हिसाब-किताब है, वो भी योगबल से खत्म करो। लेकिन स्थिति सदा बहुत-बहुत खुशी मौज मस्ती, आनन्द, अतीन्द्रिय सुख में रहे। फिर यह सब कर्मेन्द्रियाँ दासी बनकर आपको बहुत-बहुत सहयोग देंगी, प्रकृति दासी हो जायेगी। सुना। तो वर्तमान पुरुषार्थ है कि मैं अपनी कर्मातीत स्थिति बनाऊं, उसमें जितना ही त्याग रखो, उतना ही तपस्या करो तो आटोमेटिक सेवा में भी सफलता मिलती जायेगी।

हर देश की परिस्थितियों का समाचार तो आप सब सुनते रहते हो। कोई बात का ठिकाना नहीं, कहा जाता है किनकी दबी रही धूल में, किसकी राजा खाये...। आप सभी तो बहुत-बहुत लक्की आत्मायें हो जो अपना सब कुछ पहले से ही सफल कर लिया। आप सब हो ही मुक्त अर्थात् स्वतन्त्र आत्मायें। कमाया, खाया, सेवा में लगाया, मौज में रहे। मुक्त होने की कोई मेहनत नहीं। तो जो सहज मुक्त हैं वह सहज जीवनमुक्त भी बन जायेंगे। तो आप सभी वास्तव में संगम पर ही जीवनमुक्ति का मजा ले रहे हो।

बस, अब तो अपना प्यारा वतन याद आता, अब इस पुरानी दुनिया को देखते नहीं देखो, अब इस पुरानी दुनिया से दिल (मन) उठ गया है, अब तो घर (वतन) याद आता तो वतन या घर चलना है या यहाँ ही मजा है? घर याद आता है ना, तो घर चलना है, घर में हम पंछियों को उड़कर जाना है। तो उड़ता पंछी बनो, बाकी हिसाब-किताब चुक्तू करते अपनी स्व-स्थिति बहुत-बहुत-बहुत आनन्द में रहे। स्व स्थिति कभी भी गड़बड़-घोटाले में नहीं आये। आज अच्छी स्थिति है, कल कहेंगे पता नहीं क्या हुआ मेरी स्थिति ठीक नहीं है। तो ऐसी स्थिति नहीं बनाना। सदा स्व-स्थिति का ऊंचा महान चार्ट रखना, खुशी आनन्द में रहना। आप सब पहले से ही उपराम हो और ऐसे ही आगे भी उपराम रहना। अच्छा - ओम् शान्ति।